P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय राजनीति में युवा वर्ग की भूमिका

राजेश गुप्ता
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

किसी देश की मौलिक प्रगति का निर्धारण, उसका सुशिक्षित और शिक्षित युवा वर्ग ही करता है। आज देश की सीमाएँ विदेशी षड्यंत्रों और आतंकवाद से त्रस्त हैं। देश की अखंडता को चुनौतियां मिल रही हैं। ऐसे समय में युवा वर्ग का दायित्व बहुत बढ़ गया है। चरित्रवान, निर्भीक और जागरूक युवा संगठित रूप से आगे आकर आज समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्य कई सामाजिक विकृतियों से देशवासियों की रक्षा कर सकते हैं।

राजनीति में युवा वर्ग की विशेष उपादेयता है। युवा उत्साह और ऊर्जा से लबरेज होता है और अपने इन्हीं गुणों से वह राजनीति में भी गति और गरिमा लाता है। राजनीति की गतिशीलता के लिए यह जरूरी है कि इसमें युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजनीति में युवा वर्ग की सक्रियता गुणात्मक बदलाव लाती है। आशा और स्फूर्ति का संचार करती है। युवा सोशल मीडिया के जरिए देश की राजनीति के प्रति अपनी राय जाहिर कर रहे हैं। देश के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणियां कर रहे हैं और पिछड़ी सोच रखने वाले बड़बोले राजनेताओं को सोच समझकर बोलने पर भी मजबूर कर रहे हैं। युवा जिस भी दल की ओर अपना रूझान प्रदर्शित करेंगे, निश्चित ही उस दल को फायदा पहुंचेगा।

मुख्य शब्द : गतिशीलता, गुणात्मक बदलाव, रचनात्मकता, राष्ट्रशक्ति, अलगाववाद, सृजनात्मक सोच, राजनीतिक आधुनिकीकरण, प्रतिबद्धता, मतशक्ति।

प्रस्तावना

"जिनकी ऊर्जा अक्षुण्ण, जिनका यश अक्षय, जिनका जीवन अंतहीन, जिनका पराक्रम अपराजेय, जिनकी आस्था अडिग और संकल्प अटल होता है, वह युवा है और इनकी शक्ति युवा शक्ति है।"

–कठोपनिषद्

उक्त सूत्र वाक्य से हम युवा वर्ग की महत्ता को समझ सकते हैं। आंखों में उम्मीद के सपने, नई उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम और दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का साहस रखने वाला युवा कहा जाता है। युवा होने का अर्थ है विशाल क्षमता, जिज्ञासा, अनंत संभावनाएं, ऊर्जा, रचनात्मकता, हिम्मत और धैर्य आदि। हमारे देश की एक मजबूत नींव रखने के लिए उनके पास अपेक्षित कौशल, रवैया, व्यवहार, क्षमता और ज्ञान है।

राष्ट्र चेतना के कीर्ति पुरूष युवा वर्ग के आदर्श योद्धा स्वामी विवेकानंद युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। एक युवा के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगंध विदेशों में बिखरने वाले साहित्य दर्शन और इतिहास के प्रकांड विद्वान अपनी ओज पूर्ण वाणी से लोगों के दिल को छू लेने वाले स्वामी विवेकानंद जी निःसंदेह विश्व गुरू थे। उनका मानना था कि नौजवान पीढ़ी अगर अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल देश की तरक्की में करें तो राष्ट्र को एक नये मुकाम तक पहुंचाया जा सकता है क्योंकि युवा ही वर्तमान का नियामक एवं भविष्य का निर्माता होता है।

युवा एक ऐसे वर्ग विशेष का नाम है जो अक्षय ऊर्जा मनस्विता को प्रवाहित करने वाला दिव्य स्त्रोत तो है ही, राष्ट्र, समाज, सभ्यता व संस्कृति की दशा व दिशा तय करने वाला केन्द्र भी है। युवा वर्ग सदैव से ही पर्वत की अधरों को, सागर की लहरों को, धरती के कर्म को, अन्तरिक्ष के मर्म को, जीवन के सत्य को, जगत के रहस्य को भेदने का कार्य करता रहा है। युवाओं ने जहाँ एक ओर राजनीति में अपनी सक्रिय सहभागिता को दर्ज किया है, वही दूसरी तरफ जड़वत सामाजिक व्यवस्था को नेस्तोनाबूत करके उसे एक नवीन दृष्टि देकर पुनः उसे जीवन देने की कोशिश की है। युवाओं में इस प्रकार का जो सामाजिक सरोकार देखने को मिलता है वह उनकी व्यापक सामाजिक दृष्टि का

परिणाम है जिनकी गुणवत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि परिलक्षित हो रही है। इन परिस्थितियों में युवा शक्ति नेतृत्व की चर्चा आज भी प्रासंगिक है।

अध्ययन का उद्देश्य

लोकतंत्र, भारतीय राजनीति, मतदान व्यवहार, दबाव, हित समूह, राज्यों की राजनीति और राजनीतिक दल जैसे विषयों पर कई अध्ययन किये जा चुके हैं लेकिन युवा राजनीति पर बहुत कम अध्ययन किया गया है, या कह सकते है कि युवा समुदाय जो कि जनता की युवा चेतना का प्रतिनिधि होता है, उनमें आत्म बलिदान और नवीन सृजन की भी शक्ति होती है इन पर अध्ययनों का नितान्त अभाव है। इस कारण प्रस्तुत अध्ययन को युवा राजनीति पर केन्द्रित किया गया है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य राजनीति में युवा वर्ग की वैचारिक समझ एवं प्रतिबद्धता तथा उनकी राजनीति में भूमिका का अध्ययन करना है। इस आधार पर वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार हैं–

1. वर्तमान में भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप की विवेचना करना।
2. भारतीय राजनीति पर युवा वर्ग के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. मतदाता एवं नेतृत्व के रूप में युवा वर्ग की राजनीति में बढ़ती सहभागिता की विवेचना करना।
4. भारतीय राजनीतिक परिदृश्य मे युवा वर्ग के समक्ष चुनौतियां एवं समस्याओं का विश्लेषण करना।
5. राजस्थान की राजनीति में युवा वर्ग की भूमिका का विश्लेषण करना।
6. राजस्थान में 15 वें विधानसभा चुनाव 2018 में चेंजमेकर के रूप में उभरते युवा मतदाता एवं नेतृत्व की भूमिका को रेखांकित करना।
7. राजनीतिक दलों एवं उनके युवा संगठनों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ उनकी संगठन से सम्बद्धता के कारण, वैचारिक समझ, दल के प्रति प्रतिबद्धता, गतिविधियाँ एवं भविष्य की योजनाओं के बारे में जानना।
8. राजनीति में युवा वर्ग की भूमिका की उपादेयता को रेखांकित करना।
9. भावी राजनीति में युवा वर्ग की सहभागिता को और अधिक सकारात्मक एवं प्रभावी तथा उपादेय बनाने हेतु सुझाव देना।
10. राजनीति को जवाबदेह एवं पारदर्शी बनाने में युवा वर्ग की भूमिका को रेखांकित करना।
11. नई तकनीकों के दौर में ई गवर्नेस एवं ईजी गवर्नेन्स शासन व्यवस्था के उद्देष्य प्राप्ति में युवा वर्ग की भूमिका को रेखांकित करना

साहित्यावलोकन

आज जनसंचार के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति में राजनीतिक जागरूकता और सहभागिता बढ़ रही है इसी कारण व्यक्ति सक्रिय राजनीति में आकर राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास करता है। वर्तमान समय में राजनीति विज्ञान से जुड़े विषय जैसे लोकतंत्र, राज्यों की राजनीति, राजनीतिक विकास, राजनीतिक दलों एवं उनके अगों एवं मतदान व्यवहार, दबाव, हित समूह, राजनीतिक सहभागिता युवा वर्ग एवं राजनीति आदि का अत्याधिक महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति इन विषयों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा होता है। अतः इन विषयों के महत्व को समझते हुए इन पर विस्तार से चर्चा और समीक्षा की गई है। इन्हीं सन्दर्भो में सम्पन्न कुछ अध्ययन इस प्रकार हैः–

जे.सी.जौहरी (1986)[9]ने ''तुलनात्मक राजनीति'' में तुलनात्मक राजनीति मुख्य उपागम, राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक विकास, राजनीतिक आधुनिकरण, राजनीतिक समाजीकरण, राजनीतिक संस्कृति, दलीय राजनीति, दल प्रणाली, राजनीतिक दल के कार्य एवं दबावकारी गुटों की राजनीति का विशेष उल्लेख किया है।

पी.सी. जैन (1992) ने अपने अध्ययन ''संगठात्मक व्यवहार'' में विज्ञान एवं तकनीकी के तीव्र विकास के बावजूद संगठन में मनुष्य की भूमिका एवं व्यवहार की समीक्षा की है एवं समूह निर्माण की सन्तुलित विचारधारा पर प्रकाश डाला है। एवं यह भी स्पष्ट किया है कि निवास, जाति, व्यवसाय और परिवार की आर्थिक दशा किस प्रकार युवाओं की आकांक्षाओं, मूल्यों एवं राजनीतिक सहभागिता के विकास को प्रभावित करती है।

जगदीश चन्द जौहरी एवं सीमा जौहरी (1992) ने अपने अध्ययन ''आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त'' में उन्होने केवल राजनीति विज्ञान का अध्ययन राज्य और शासन तक ही नहीं किया है, अपितु इस अध्ययन में उन्होने इसका सम्बन्ध सत्ता एवं स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सभी संस्थाओं से बताया है। इस अध्ययन में राजनीतिक विकास, सरकार का संगठन, प्रजातंत्र की कार्यविधि, लोकतंत्र के सिद्धान्त, दलीय व्यवस्था, दबाव समूह तथा जनमत एवं वैज्ञानिक समाजवाद आदि का विस्तार से वर्णन किया है।

साधना शर्मा (1995) ने अपने अध्ययन ''स्टेट पॉलिटिक्स इन इण्डिया'' में राजनीतिक दलों एवं राज्यों की राजनीति में आन्ध्रप्रदेश, असम, बिहार, गुजरात, केरल, मध्यप्रदेश, मणिपुर, राजस्थान एवं अन्य राज्यों के राजनीतिक दलों और युवाशक्ति के राजनीति पर प्रभाव की समीक्षा की है।

अरूण चतुर्वेदी एवं सोहनलाल मीणा (1996) द्वारा सम्पादित अध्ययन ''राजनीति के विविध आयाम'' में राजनीति से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को स्पष्ट किया गया है। इनमें प्रमुख रूप से राजनीति विज्ञान की परम्परागत सीमाएँ, राष्ट्रीय लक्ष्य एवं राजनीतिक दल प्रमुख है।

राजेन्द्र कुमार शर्मा (1996) द्वारा सम्पादित अध्ययन ''राजनीतिक समाजशास्त्र'' में भारत के राजनीतिक नेतृत्व के बदलते हुए प्रतिमान के साथ राजनीतिक नेतृत्व और राजनीतिक दलों एवं उनके अंगों की समीक्षा की है।

एस.के. घोष (1997) ने इण्डियन ''डेमोक्रेसी ड्रिल्ड : पॉलिटिक्स एण्ड पोलिटिशियन'' में उनके द्वारा संसदीय लोकतंत्र की सफलता या विफलता, चुनावी राजनीति पर धर्म का प्रभाव और ब्रिटेन के लोकतंत्र की समीक्षा की है।

दीपक कुमार (2002) ''भारत में क्षेत्रीय आन्दोलन'' के अध्ययन द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया है कि युवाओं में आत्मनिर्भरता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राजनीतिक चेतना का विकास किन सामाजिक परिवर्तनों के द्वारा प्रभावित होता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि जाति, समूह, मित्रों का समूह, क्षेत्र की तुलना में परिवार का प्रभाव युवाओं के आत्मनिर्भरता के विकास में प्राथमिक है। दामले के अनुसार युवाओं के मूल्य एवं चारित्रिक विशेषताएँ भी उनके भावी जीवन में नवीन नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता के विकास को प्रभावित करने में सहायक हो सकती हैं।

मीना राठौर (2003) ने ''भारत में राजनीतिक दल'' में बताया है कि राजनीतिक दल दीर्घकालीन समर्थन जुटाने के नीतिपरक प्रयासों के बजाए तात्कालिक निर्वाचनिक लक्ष्यों की सिद्धि के लिये प्रयत्नशील रहने लगे हैं। अध्ययन में भारत में दलीय व्यवस्था के स्वरूप का सटीक सर्वेक्षण है तथा भारत में दलीय समर्थन के आधारों के वर्तमान एवं सम्भावनाओं का तलस्पर्शी आकलन है।

ए.एस. नारंग (2005) ने ''भारतीय शासन एवं राजनीति'' में भारतीय शासन की सभी प्रमुख विशेषताओं भारतीय संसद, न्याय व्यवस्था, स्थानीय शासन, पंचायती राज, राजनीतिक दलीय व्यवस्था, और भारत के राजनीतिक दलों को विस्तार से समझााया है, जो भारतीय शासन और राजनीति को समझने में सहायक है।

एस.एस. सईद (2007) ने ''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था'' में भारतीय राजनीति और शासन के बदलते हुए स्वरूप का आनुभविक अध्ययन किया है, इस अध्ययन में उन्होने शासन के संस्थागत पक्ष का भी उल्लेख किया है एवं साथ ही भारत की दलीय राजनीति को भी समझाया है।

श्यामकृष्ण पाण्डेय (2008) ने ''भारतीय छात्र आन्दोलन का इतिहास भाग एक'' में स्वाधीनता के दौर के छात्र एवं युवा संगठनों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को बताया है एवं इसी अध्ययन के द्वितीय भाग– ''भारतीय छात्र आन्दोलन का इतिहास'' में स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय, प्रान्तीय और आंचलिक स्तर पर जो प्रमुख छात्र एवं युवा आन्दोलन हुए हैं उनकी विस्तार से विवेचना की गई है एवं उनकी कार्यविधि को बताया है।

जगदीश्वर चतुर्वेदी (2009) ने ''लोकसभा चुनाव और मीडिया'', में अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि भारतीय राजनीति को राजनीतिक भर्ती और नेतृत्व की प्रक्रिया किस प्रकार प्रभावित करती है। इस अध्ययन में राजनीतिक सहभागिता, मतदान व्यवहार एवं राजनीतिक जागरूकता की सामान्य दशाओं पर यथेष्ठ प्रकाश डाला गया है।

हरीश चन्द्र उप्रेती (2013) ने ''यूथ पॉलिटिक्स इन इंडिया'' में अध्ययन किया है कि किसी भी राष्ट्र के विकास एवं निर्माण में अनादिकाल से ही युवकों की भूमिका को नकारा जाना सम्भव नहीं है। युवा वर्ग अपनी असीमित शक्ति एवं सराहनीय योगदान के द्वारा जिस किसी क्षेत्र में चाहता है, सफलता दिला ही देता है। शक्ति शब्द स्वयं में ही सफलता का पर्याय है, युवा शक्ति को यदि सही दिशा–निर्देश मिल जाय तो समाज के हितों को साधा जा सकता है, लेकिन दिशाहीनता के परिणाम के घातक प्रभाव सार्वजनिक हैं। इतिहास साक्षी है कि आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक जितने भी संघर्ष व आंदोलन हुए हैं युवकों, विशेषकर छात्रों की भूमिका सर्वोच्च रही है, युवक ही संघर्ष के आधार बने।

संजय कुमार (2014) द्वारा सम्पादित पुस्तक ''भारतीय युवा और चुनावी राजनीति'' में भारतीय युवावर्ग और चुनावी राजनीति के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध का अध्ययन करती है। पुस्तक कई प्रासंगिक सवालों के जवाब देती हैः क्या युवा मतदाताओं के लिए, एक युवा प्रत्याशी बहुत मायने रखता है? यदि युवा प्रत्याशी चुनाव में खड़े हों, तो क्या युवा वर्ग अधिक उत्साहपूर्वक वोट देते हैं? प्रचलित धारणाओं के विपरीत, भारतीय युवावर्ग में चुनावी राजनीति के प्रति रुचि बढ़ी है, लेकिन जब मतदान की बारी आती है, तो इनकी भागीदारी बहुत कम होती है।

दिनेश पाण्डेय (2017) द्वारा सम्पादित पुस्तक युवा शक्ति एवं राजनीति ''राजनीतिक मुद्दों को लेकर युवाओं में जागरूकता'' के स्तर पर दृष्टि डालती है और चुनावी राजनीति में युवाओं की अभिरुचि और उनकी भागीदारी का विश्लेषण करती है। यह इस ओर भी इशारा करती है कि भारतीय युवाओं का एक बड़ा प्रतिशत राजनीति को अपने करियर के रूप में चुनने का इच्छुक होगा तथापि लिंग, अवस्थिति और इसी तरह के विभिन्न सामाजिक घटकों के साथ–साथ युवा अभिरुचि और चुनावी भागीदारी के स्तर में अंतर है।

लाखाराम चौधरी (2018) ने ''भारत में चुनावी राजनीति और चुनाव सुधार के प्रयास'' में लिखा है कि अनेकानेक विचारकों ने युवा शक्ति को राष्ट्र की शक्ति के रूप में देखा और इन्हें राष्ट्र के नवनिर्माण का साधन के रुप में स्वीकारा। आज युवाओं ने जहाँ एक ओर राजनीति में अपनी सक्रिय सहभागिता को दर्ज किया है, वही दूसरी तरफ जड़वत सामाजिक व्यवस्था को नेस्तोनाबूत करके उसे एक नवीन दृष्टि देकर पुनः उसे जीवन देने की कोशिश की है। युवाओं में इस प्रकार का जो सामाजिक सरोकार देखने को मिलता है वह उनकी व्यापक सामाजिक दृष्टि का परिणाम है। इन परिस्थितियों में युवा शक्ति नेतृत्व की चर्चा आज भी प्रासंगिक है।

उपर्युक्त अध्ययनों की समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ है कि सामान्यतः राजनीतिक विचारकों के लिए वर्तमान में युवाओं की राजनीति में भूमिका बढ़ती जा रही है। प्रत्येक राजनीतिक दल को युवाओं की शक्ति का आभास है इसलिये लगभग सभी राजनीतिक दल छात्र संगठन के माध्यम से युवाओं को राजनीति में लाने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित करते है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य विषय युवा वर्ग संगठन से जुड़ा है और उपर्युक्त साहित्य की समीक्षा से प्राप्त विचार निश्चित रूप से अध्ययन के लिए उपयोगी होंगे।

परिकल्पना

सामान्य जनजीवन में राजनीति को षडयंत्र, कुटिलता, धूर्तता, चालबाजी, धोखाधड़ी का पर्याय माना जाता है जबकि वास्तविकता में राजनीति राष्ट्रीय व्यवस्था

एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को सुचारू व सुगम बनाने की प्रणाली है। इसके अपने मूल्य एवं नीतियां हैं जो सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय के उच्च आदर्शों से ओत–प्रोत हैं।

युवाओं का राजनीति में आने का अर्थ ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें युवाओं की स्वयं को संगठित करने की क्षमता बढ़ती तथा सुदृढ़ होती है। देश की राजनीति में युवा वर्ग की भूमिका का अर्थ यह भी है कि वे सामाजिक आंदोलन में भाग ले सकें और उनका नेतृत्व भी कर सकें तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रगति के मार्ग में आने वाली तमाम बाधाओं को हटा सकें।

कुछ राजनेताओं द्वारा सुशासन के नाम पर कुशासन, भ्रष्ट्राचार और आपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता के कारण राजनीति के क्षेत्र में वैचारिक शून्य पैदा हुआ है, जिसको भरने के लिए युवा पीढ़ी से उम्मीद करना सुखद अनुभव की बात है।

युवाओं की भागीदारी के बिना यथास्थिति में बदलाव की आशा बेमानी होगी। पिछले छह दशकों में जो भी देशव्यापी सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन हुए हैं, उनमें युवाओं की भागीदारी रही है।

राजनीति में युवा वर्ग की विशेष उपादेयता है। राजनीति की गतिशीलता के लिए यह जरूरी है कि इसमें युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजनीति में युवा वर्ग की सक्रियता गुणात्मक बदलाव लाती है।

युवाओं की राजनीति में गहराती दिलचस्पी ने लोकतंत्र का चेहरा अधिक उजला किया है और राजनीति में जिस ईमानदारी की मांग लंबे समय से की जा रही थी उसके लिए जगह बनाने का काम भी किया है। ये युवा जो अलग–अलग तरह के कैम्पेन चला रहे हैं और लोगों की मुश्किलों और उनमें जुड़े मुद्दों को सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं, वे बदलाव का नया चेहरा हैं।

युवाओं को राजनीति की मुख्यधारा में लाना और निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाना आज की जरुरत है। शासन और तंत्र के साथ मिलकर युवा समाज में सामाजिक, आर्थिक और नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं एवं वे समाज में प्रचलित कुप्रथाओं और अंधविश्वास को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

देश के युवा राजनीति में प्रवेश करके जवाबदेही के साथ अखंडता, ईमानदारी, मूल्य प्रणाली, साहस, प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी के साथ एक विकासशील, सुसंस्कृत एवं सुरक्षित भारत का निर्माण करेंगे।

शोध पद्धति और अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन में प्रयुक्त तथ्य संकलन के स्रोत का विवरण अग्रानुसार है –

प्राथमिक तथ्य

(अ) व्यक्तिगत प्रेक्षण (ब) साक्षात्कार
(स) प्रश्नावली (द) अनुसूची
(य) अन्य विधियां

द्वितीयक आंकड़े

तथ्य संकलन के द्वितीयक स्रोतों में राजनीति एवं युवा वर्ग तथा इनसे संबंधित विभिन्न प्रकार के विषय से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों, शोध जर्नल, शासकीय एवं अशासकीय प्रकाशन और समाचार पत्र पत्रिकाओं एवं उपलब्ध साहित्य एवं प्रतिवेदनों आदि से जुटाए गए दस्तावेज आदि का प्रयोग किया गया, ताकि शोध को पर्याप्त आगत मिल सके।

अनुसन्धान में तथ्य संकलन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है, किन्तु मात्र संकलन से किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं की जा सकती। अतः सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि तथ्यों को सुव्यवस्थित करके उनका विश्लेषण किया जाए। अध्ययन में तथ्य विश्लेषण एवं तथ्यों के प्रस्तुतीकरण में समाज वैज्ञानिक रूप से महत्त्वपूर्ण प्रणालियों वर्गीकरण, सारणीयन, सांख्यिकी विश्लेषण आदि का प्रयोग किया गया।

इसके अंतर्गत प्रमुखतया वर्तमान में भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप की विवेचना, भारतीय राजनीति पर युवा शक्ति का प्रभाव, मतदाता एवं नेतृत्व के रूप में युवा वर्ग की राजनीति में बढ़ती सहभागिता, इत्यादि बिन्दुओं का अध्ययन किया गया।

शोध से प्राप्त परिणाम

वैश्विक परिपेक्ष्य में युवा वर्ग की भूमिका

इतिहास साक्षी है कि संसार के पटल पर जितने भी विद्रोह आन्दोलन हुए हैं चाहे वह सत्ता परिवर्तन के लिए हो, आजादी के लिए अथवा व्यवस्था परिवर्तन के लिए हो, युवा वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका को झुठलाया नहीं जा सकता है। कलिंग युद्ध के समय वहां के न केवल युवा और युवतियों ने विशाल सेना का सामना किया, बल्कि वहां के छोटे–छोटे निःसहाय बच्चों ने भी साहसपूर्वक मातृभूमि की बलि वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इंग्लैंड के किशोरों ने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों द्वारा अपने देश की सेवा की थी। इस प्रकार हम आंदोलनों की सफलता के एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में युवा वर्ग को अवश्य स्वीकार कर सकते हैं। बहुत से विचारकों ने युवा शक्ति को राष्ट्र शक्ति के रूप में स्वीकार किया है।

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम पाते हैं कि एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के अनेक राष्ट्रों में लोकतंत्र की मांग के समर्थन में उठाई गई आवाजों के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करने, जन–जन राजनीतिक चेतना जगाने, राष्ट्रवाद की भावना विकसित करने एवं लोकतांत्रिक सरकारों की स्थापना करने में युवाओं की भूमिका निर्णायक रही। इसके बाद देशों के राजनीतिक आधुनिकीकरण–विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के प्रसंग में युवाओं की सार्थक व निर्णायक भूमिका रही। विकासशील राष्ट्रों को प्रगति के पक्ष पर ले जाने में तो युवाओं का विशेष योगदान रहा। उन्हें विकास और राजनीतिक आधुनिकीकरण को उत्कर्ष प्रदान किया।

राजनीति में युवा वर्ग की शक्ति की चर्चा करते हुए यदि वर्ष 1868 के छात्र आंदोलन का जिक्र न किया जाए, तो शायद यह चर्चा अधूरी रह जाएगी। यह युवा आंदोलन की एक ऐसी असाधारण घटना थी, जिसने फ्रांस की एक तिहाई जनता को इस कदर उद्वेलित किया कि वह युवा शक्ति के साथ चल पड़ी। इसी प्रकार वर्ष 1960 में जापान–अमेरिका सुरक्षा संधि विरोधी युवा आंदोलन ने ऐसा प्रभाव दिखाया कि तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति

आइजनहॉवर को जापान यात्रा स्थगित कर देनी पड़ी।

ताजा संदर्भो में अरबों के बसंत का जिक्र करना भी प्रासंगिक होगा। यहां युवा वर्ग ने बदलाव की लहर लाकर एक गैरमामूली कारनामा कर दिखाया। ट्यूनीशिया में एक गरीब युवक ने इसका सूत्रपात किया। वह खुद तो मर मिटा, किन्तु उसने अपने बलिदान से 30 वर्ष पुरानी अलोकतांत्रिक सत्ता को ध्वस्त कर देने का रास्ता साफ कर दिया। बाद में क्रांति और बदलाव की यह लहर मिस्र, यमन, बहरीन और लीबिया तक पहुंची। यकीनन अरब जगत में लोकतंत्र के बसंत के पदार्पण और राजनीतिक बदलावों में युवा वर्ग की भूमिका अग्रणी रही।

भारतीय परिपेक्ष्य में युवा वर्ग की भूमिका

भारतीय राजनीति में भी युवा वर्ग का गौरवशाली अतीत रहा है। वीर शिवाजी और वीरांगना लक्ष्मी बाई जैसी युवा शक्तियों ने अपने पराक्रम, सूझ–बूझ और साहस की जो मिसालें पेश कीं, वे अद्भुत हैं। वीर सावरकर, चापेकर बंधु, चन्द्रशेखर आजाद, मदन लाल धींगरा, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, अशफाक उल्ला खाँ, सुभाष चन्द्र बोस, रासबिहारी बोस आदि ने आजादी की लड़ाई में युवा शक्ति का ही प्रतिनिधित्व किया और अंग्रेजों को वापस लौटने पर विवश कर दिया। वस्तुतः युवा विवेकानंद ने राष्ट्रीय विचारधारा को जो मोड़ दिया, उसने श्री अरविन्द, विपिन चन्द्र पाल, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी जैसे राजनीतिज्ञों व चिन्तकों के चिंतन के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार की। भारत के स्वतंत्रता–संग्राम में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका देश के युवा वर्ग ने ही निभायी थी। गांधीजी के एक आह्यवान पर युवाओं ने विद्यालयों और विष्वविद्यालयों का बहिष्कार करके सक्रिय आंदोलन में भाग लिया ।

आजादी के बाद के दौर में भी भारतीय राजनीति में युवा वर्ग की शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान बना रहा और इस शक्ति ने विसंगतियों और विद्रूपताओं के खिलाफ संघर्ष कर स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के रूप में जब एक युवा प्रधानमंत्री देश को मिला था, तब भारतीय राजनीति में एक अनूठी स्फूर्ति और चमक दिखी थी। राजीव गांधी स्वयं युवा शक्ति के प्रबल पक्षधर थे और भारतीय राजनीति में युवकों की भागीदारी बढ़ाना चाहते थे।

भारत में पहले मताधिकार के लिए न्यूनतम आयु 21 वर्ष थी। स्व. प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में 61वें संविधान संशोधन अधिनियम 1989 द्वारा मताधिकार की न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष कर दी गई। इस संशोधन के पीछे मंशा यही थी कि निर्वाचन और राजनीति में युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजीव गांधी के प्रयासों से न सिर्फ युवा मतदाताओं का प्रतिशत बढ़ा, बल्कि राजनीति में उनकी भागीदारी भी बढ़ी। इसी का परिणाम है कि आज देश के प्रत्येक राजनीतिक दल को एक अदद करिश्माई युवा नेता की तलाश इसलिए है, क्योंकि राजनीति में राजनीतिक दल युवा शक्ति की महत्ता को समझते हैं।

युवा भारत एवं राष्ट्र निर्माण में युवा वर्ग का योगदान

भारत जैसे विकासशील राष्ट्र विवेकसम्मत आयोजन के साथ अपने उत्साही युवाओं और उनके कल्याण को प्रोत्साहित करते हैं। 2020 तक जब भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम की होगी और हम दुनिया के सबसे युवा राष्ट्र बन जाएंगे। इसी कारण आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है क्योंकि हमारे देश में असम्भव को संभव में बदलने वाले युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए युवा एक खजाना है जो अनमोल है।

युवा राष्ट्रीय विघटन, अस्थिरता, राष्ट्रीय व सामाजिक विसंगतियों तथा अलगाववाद आदि के खिलाफ मुखर होकर जहां एक सकारात्मक व सृजनात्मक सोच को विस्तार देते हैं, वहीं राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप एवं जनहितकारी व्यवस्था प्रदान करने में भी सराहनीय भमिका निभाते हैं। ऐसा करते हुए वे राष्ट्र निर्माण की बाधाओं को दूर करते हैं।

सबसे अच्छी बात है कि भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले युवाओं की संख्या का विस्तार तेजी से हो रहा है। आईआईटी, आईआईएम और देश के विभिन्न हिस्सों में अच्छे संस्थान से शिक्षा पा रहे ऐसे कई युवा हैं जो राजनीति में प्रवेश के लिए इच्छुक दिखाई दे रहे हैं। युवाओं की राजनीति में बढ़ती दिलचस्पी पिछले तीन–चार वर्षों में सभी चुनाव विश्लेषकों और राजनीति पर बारीक नजर रखने वालों के लिए आकर्षण का विषय रही है। वर्ष 2013 में सेंटर फोर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज (सीएसडीएस) ने एक सर्वे में भी इस तरफ इशारा किया था कि अब राजनीति के प्रति युवाओं का रूझान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

युवा पहले भी राजनीति में अपनी ताकत दिखाते रहे हैं लेकिन लंबे समय से नेता उनको चुनाव के समय में इस्तेमाल करके लोकसभा –विधानसभा की सीढ़ी पर चढ़कर दोबारा चुनाव के समय में ही उनको देखते थे, लेकिन अब स्थितियां बदलने लगी हैं। प्रमुख राजनीतिक दल युवाओं को पार्टी से जोड़ने के लिए रणनीति बनाने में जुटे हुए हैं। भारत युवा आबादी वाला देश है और बीते कुछ दशकों में यहां युवा मतदाताओं की संख्या लगातार बढ़ी है।

युवा सोशल मीडिया के जरिए देश की राजनीति के प्रति अपनी राय जाहिर कर रहे हैं। देश के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणियां कर रहे हैं और पिछड़ी सोच रखने वाले बड़बोले राजनेताओं को सोच समझकर बोलने पर भी मजबूर कर रहे हैं। युवा जिस भी दल की ओर अपना रूझान प्रदर्शित करेंगे, निश्चित ही उस दल को फायदा पहुंचेगा।

राजनीति में युवा भागीदारी बढ़ाने हेतु प्रयास

राजनीति में युवा भागीदारी बढ़ाने हेतु शासन एवं सरकार के प्रयास भी जारी है। राष्ट्रीय युवा नीति (2014) का उद्देश्य देश के युवाओं का सशक्तिकरण करना, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें और उनके माध्यम से भारत, राष्ट्रों के समुदाय में उचित स्थान हासिल करने में सक्षम हो सके। इसे हासिल करने के लिए 5 महत्वपूर्ण लक्ष्यों, 11 प्राथमिकता क्षेत्रों और तदनुरूप भावी अनिवार्यताओं की पहचान की गई है, जिन्हें युवाओं के विकास के लिए आवश्यक समझा गया है, जिनमें से प्रमुख लक्ष्य एक सुदृढ़ और स्वस्थ पीढ़ी का विकास करना, जो

भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो एवं राजनीति और शासन में भागीदारी तथा राजनीतिक प्रणाली से बाहर रहने वाले युवाओं को उसमें ,ाामिल करना सम्मिलित है। देश की व्यापक विविधता और क्षेत्र–विषयक जरूरतों और युवाओं के सरोकारों का समाधान करने की जरूरत को देखते हुए राज्य सरकारें भी अब स्वयं की राज्य युवा नीति बनाने लगी हैं।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में युवा वर्ग का मौजूदा परिदृश्य अत्यंत उत्साहवर्धक है। ऊर्जा से लबरेज अनेक युवा विभिन्न राजनीतिक दलों में अच्छे नेतृत्वकर्ता के रूप में नजर आ रहे हैं। स्फूर्ति एवं नई सोच के साथ ये भारतीय राजनीति में सक्रिय हैं तथा इन्होंने अपने कार्यों से अच्छी छाप छोड़ी है। यह सिलसिला इसी रूप में आगे भी बने रहने की संभावना है। युवा शक्ति ही भारतीय राजनीति में गुणात्मक एवं सकारात्मक बदलाव ला सकती है। यह सुखद है कि मौजूदा दौर में भारत न सिर्फ वैश्विक स्तर पर युवा शक्ति के रूप में उभर रहा है, बल्कि राजनीति में भी भारतीय युवा अच्छा प्रदर्शन कर लोकतंत्र को समृद्ध कर रहे हैं।

युवा हाथ न सिर्फ लोकतंत्र का एक साफ–सुथरा चेहरा गढ़ेंगे, बल्कि उसे ताजगी और ऊर्जा भी प्रदान करेंगे, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए। राजनीति में इसका सकारात्मक योगदान देश की कायापलट सकता है। अतः युवा वर्ग का राजनीति में होना राष्ट्र निर्माण में बहुमूल्य भूमिका निभा सकता है। अतः किसी भी देश में राजनीतिक गतिशीलता और पारदर्शिता के लिए राजनीति में युवा वर्ग का होना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि यही वह शक्ति है जो गुणात्मक बदलाव लाने में सक्षम होती है।

ऐसे संकेत मिलते हैं कि भारत के युवाओं का राजनीति की ओर तेजी से रूझान बढ़ा है। राजनीति में युवाओं की बढ़त भागीदारी को कोई भी राजनीतिक दल आज नजरअंदाज करने की स्थिति में नहीं है। युवाओं की राजनीति में गहराती दिलचस्पी ने लोकतंत्र का चेहरा अधिक उजला किया है और राजनीति में जिस ईमानदारी की मांग लंबे समय से की जा रही थी उसके लिए जगह बनाने का काम भी किया है। ये युवा जो अलग–अलग तरह के कैम्पेन चला रहे हैं और लोगों की मुश्किलों और उनमें जुड़े मुद्दों को सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं, वे बदलाव का नया चेहरा हैं।

भारत जैसे देश में जहां लोकतांत्रिक तरीके से काम करने की सशक्त परम्परा है, जीवंत जनमत है और युवाओ की प्रगति व कल्याण में रुचि लेने वाला समाज का एक प्रभावशाली वर्ग विद्यमान है, युवावर्ग का राजनीतिक भविष्य सुदृढ़ होना निश्चित है। युवाओं को राजनीति की मुख्यधारा में लाना और निर्णय प्रक्रिया में भागीदार बनाना आज की जरुरत है। शासन और तंत्र के साथ मिलकर युवा समाज में सामाजिक, आर्थिक और नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं एवं वे समाज में प्रचलित कुप्रथाओं और अंधविश्वास को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सुझाव

देश के युवा राजनीति में प्रवेश करके जवाबदेही के साथ अखंडता, ईमानदारी, मूल्य प्रणाली, साहस, प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी के साथ एक विकासशील, सुसंस्कृत एवं सुरक्षित भारत का निर्माण करेंगे। मतदाता का मत ही जनतंत्र का निर्माण करता है और इनके आधार पर ही राजनीतिक नेतृत्व की दशा–दिशा तय होती है। ऐसे में यदि भारत का भविष्य यानी युवा, सत्ता एवं जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में सक्रिय हस्तक्षेप नहीं कर पाता है तो पर्याप्त मतशक्ति के बावजूद राजनैतिक नेतृत्व मे उसकी प्रत्यक्ष भागीदारी संभव नहीं हो सकती।

हमारे देश में जहां हमारे पास युवा जनसंख्या का इतना बड़ा अनुपात है जिनकी क्षमता का पर्याप्त रूप से फायदा नहीं उठाया गया तो हमारे देश के राजनीतिक विकास पर गंभीर प्रभाव पड सकता है। इसलिए सभी नेताओं को एक साथ आने और हमारे युवाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यदि युवाओं को राजनीति में उचित प्रतिनिधित्व प्रदान नहीं दिया गया, तो मानव संसाधनों का भारी राष्ट्रीय क्षय होगा। उन्हें किसी सकारात्मक कार्य में भागीदार बनाया जाना चाहिए। यदि इस क्रियाशील मानवशक्ति को देश के राजनीतिक विकास में प्रयुक्त किया जाए तो यह अद्भुत कार्य कर सकती है।

राजनीतिक सक्रियता का अर्थ चुनाव लड़ना नहीं, अपितु सामयिक विषयों पर जागरूक व आंदोलनरत रहना है। कामचोरी, राजनीति में वंषवाद, मंहगी शिक्षा और चिकित्सा, खाली होते गांव, घटता भूजल, आतंकवाद, माओवादी और नक्सली हिंसा, बांग्लादेशियों की घुसपैठ, जनसंख्या के बदलते समीकरण, किसानों द्वारा आत्महत्या, गरीब और अमीर के बीच बढ़ती खाई आदि तो राष्ट्रीय मुद्दे हैं ही, इनसे कहीं अधिक स्थानीय मुद्दे होंगे, जिन्हें आंख और कान खुले रखने पर पहचान सकते हैं। आवश्यकता यह है युवा चुनावी राजनीति में तो सक्रिय बने ही, साथ ही साथ इन ज्वलंत मुद्दों पर भी उनकी सक्रियता हों। उनकी ऊर्जा, योग्यता, संवेदनशीलता और देशप्रेम की आहूति पाकर देश का राजनीतिक परिदृश्य निश्चित ही बदलेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, जे.सी. एवं चौधरी एन.के, ''इलेक्शन्स इन इण्डिया'', 1952–1996., शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1996

अग्रवाल, विजय, ''आजादी की लड़ाई'', शुभम् प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ० 66

अवस्थी, रामकुमार,, ''राजनीति शास्त्र के नये क्षितिज'', द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1972.

आशीर्वादम, ए.डी., ''राजनीतिक शास्त्र'', द अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ, 1960

उप्रेती, हरीश चन्द्र, यूथ पॉलिटिक्स इन इंडिया रूपा बुक्स इंटरनेशनल, नई दिल्ली, (2013)

कश्यप, सुभाष, ''संसदीय लोकतन्त्र का इतिहास'', शिप्रा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1991.

कुमार, दीपक, ''भारत में क्षेत्रीय आन्दोलन'', अमन प्रकाशन, नमक मंडी कटरा, सागर, 2002.

कुमार, संजय, ''भारतीय युवा और चुनावी राजनीति'' सेगे पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, (2014)

कोठारी, रजनी, ''कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स'', ओरिएण्ट लॉगमेन, दिल्ली, 1970.

कोठारी, रजनी, ''पॉलिटिक्स इन इंडिया'', ओरिएण्ट लॉगमेन, दिल्ली, 1972.

गांगुली, बी. एवं गांगुली, एम., ''वोटिंग बिहेवियर इन ए चेन्जिग सोसायटी'', स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1975.

गुप्ता, बी. दास, ''स्टूडेन्ट पालिटिक्स इन द वेस्ट फ्रंटियर'', कलकत्ता, सितम्बर 14, 1968

गेना, सी.बी., ''तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाए'', विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1978.

गोयल, एम.एल., ''पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन इन ए डेवलपिंग नेशन'', इंडिया एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1974.

घोष, एस.के., ''इण्डियन डेमोक्रेसी ड्रिल्ड–पॉलिटिक्स एण्ड पॉलिटीशियंस'', ए.पी.एच. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997

चतुर्वेदी, अरूण, ''राजनीति के विविध आयाम'', प्रिंटवेल पब्लिकेशर्स, 1996.

चतुर्वेदी, जगदीश्वर,, ''2009 लोकसभा चुनाव और मीडिया'', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2009.

चंद्र, विपिन, ''भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद'', अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 1998

चौधरी, डी.एस. एवं कार, जी.के., ''इलेक्शन्स एण्ड इलेक्टोरल बिहेवियर इन इंडिया'', कान्ति पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1992.

चौधरी, लाखाराम, ''भारत में चुनावी राजनीति और चुनाव सुधार'', हिंदी ग्रन्थ अकादमी , 2018

जाखड़, बलराम, ''पीपुल, पार्लियामेण्ट एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन'', मेट्रोपॉलिटन प्रेस, नई दिल्ली, 1982.

जैन, कैलाश चन्द्र, ''भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास'', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, कर्मपुरा, नई दिल्ली, 1996

जैन, पी.सी., ''संगठनात्मक व्यवहार'', सरस्वती पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1992.

जोशी, आर.पी. एवं आढ़ा आर.एस., ''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, पुनरर्चना के नये आयाम'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2000.

जौहरी, जे.सी. सीमा जौहरी, ''आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धांत'', स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1992.

जौहरी, जे.सी., ''तुलनात्मक राजनीति'', स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1986.

टेलर, मीनाक्षी, ''भारत में संसदीय शासन के औचित्य का परीक्षण'', पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, 1999.

तिलक, रघुकुल, ''लोकतन्त्रीय स्वरूप एवं समस्याएँ, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1972.

दास, हरिहर, ''पालिटिकल सिस्टम आफ इंडिया'', अनमोल पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली, 1998.

दिनकर, सक्रिकर, ''ए हिस्ट्री आफ द स्टूडेन्ट मूवमेन्ट इन इंडिया'', बम्बई, 1946, पृ. 33

नारंग, ए.एस., ''भारतीय शासन एवं राजनीति'', गीतांजलि पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005.

नारायण, इकबाल, ''इलेक्शन स्टडीज़ इन इंडिया'', एलाईड पब्लिशर्स, मुम्बई, 1978.

नारायण, इकबाल, ''लिन्केज : इलिट एण्ड इलेक्शन इन एन इंडियन स्टेट'', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1978.

नारायण, इकबाल, ''स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया'', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1967.

नारायण, जयप्रकाश, ''देश की तरुणाई को आह्वान'', सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, 1974

नारायण, देसाई, ''विश्व की तरुणाई'', सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी, 1998

निगम, श्यामसुन्दर, ''मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के सोन्धवाड़ अंचल के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश का अध्ययन'', ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, 2010.

पाण्डेय, दिनेश, ''युवा शक्ति एवं राजनीति'', राज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, (2017)

पाण्डेय, श्यामकृष्ण, ''भारतीय छात्र आन्दोलन का इतिहास'', भाग एक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद, 2008

प्रिंस, क्रोपाटिकिन, ''नवयुवकों से दो बातें'', सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

बनर्जी, के., ''रीजनल पॉलिटिकल पार्टिस इन् इण्डिया'', बी.आर. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1984.

ब्रॉस, पॉल, ''कास्ट, फैक्शन एण्ड पार्टी इन इंडियन पॉलिटिक्स'', चाणक्य पब्लिशर्स, नई दिल्ली , 1984.

भगत, के. अंजना, ''इलेक्शन्स एण्ड इलेक्टोरल रिफार्मस् इन इंडिया'', विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1996

भण्डारी, कुसुमलता, ''इंडियन इलेक्टोरल रिफार्म'', इलेक्शन आर्चिव, नई दिल्ली, 1988.

भट्ट, राजेन्द्रशंकर, ''1989 लोकसभा निर्वाचन'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1990.

भाम्भरी, सी.पी., ''इलेक्शनस् –1991: एन एनालिसिस'', बी. आर. पब्लिशिंग, नयी दिल्ली, 1991.

भाम्भरी, सी.पी., ''द अरबन वोटर्स'', नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली, 1973.

भाम्भरी, सी.पी., ''भारतीय जनता पार्टी: पेरीफेरी टू सेण्टर'', शिप्रा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001.

मनमोहनीपुरी, ''महान व्यक्तित्व'', भाग 4, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित, दिल्ली, 1999

मीरचंदानी, जी.जी. एवं मूर्ति के.एस.आर., ''मेसिव मेण्डेट फार राजीव गांधी'', स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1985.

राठौर, मीना, ''भारत में राजनीतिक दल'', आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर 2003.

रॉय, मीनू, ''इंडिया वोट्स इलेक्शन्स 1996 – ए क्रिटिकल एनालिसिस'', दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, नइ दिल्ली, 1996.

शर्मा, अशोक, ''भारत में स्थानीय प्रशासन'', आर.बी.एस. ए. पब्लिशर्स, जयपुर, 2010.

शर्मा, जी.पी., ''भारत में राज्यों की राजनीति'', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 2010.

शर्मा, राजेन्द्र कुमार, ''राजनीतिक समाजशास्त्र'', अटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1996.

शर्मा, शंकर दयाल, ''हमारे प्रेरणा पुंज'', (पूर्व उद्धृत) प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1996.

शर्मा, शंकर दयाल, ''हमारे स्वतंत्रता सेनानी'', मनीष प्रकाशन, अल्मोडा, 1997.

शर्मा, साधना, ''स्टेट पॉलिटिक्स इन इण्डिया'', मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1995.

सईद, एस.एस., ''भारतीय राजनीतिक व्यवस्था'', भारत बुक सेन्टर, लखनऊ, 2007.

सत्यदेव सिंह, ''भारतीय युवा आक्रोश'', विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1974

सिंह, वीरकेश्वर प्रसाद, ''भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एवं संवैधानिक विकास'' ज्ञानदा प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 1997

शोध पत्रिकाएँ

आऊट लुक : नई दिल्ली
इण्डिया टुडे : नई दिल्ली
क्रॉनिकल : नई दिल्ली
पॉलिटिकल साइंस रिव्यू : जयपुर
प्रतियोगिता दर्पण : आगरा
वर्ल्ड अफेयर्स : नई दिल्ली
वर्ल्ड फोकस : नई दिल्ली

प्रमुख समाचारपत्र

जनसत्ता : नई दिल्ली
द टाइम्स ऑफ इण्डिया : नई दिल्ली
दैनिक जागरण : नई दिल्ली
दैनिक भास्कर : जयपुर
पंजाब केसरी : नई दिल्ली
राष्ट्रीय सहारा : नई दिल्ली
राजस्थान पत्रिका : जयपुर
हिन्दुस्तान टाइम्स : नई दिल्ली